लेखक-

आशुतोष प्रताप "यदुवंशी"

आशुतोष प्रताप "यदुवंशी"

प्रकाशक

भूमिका

यह हमारा प्रथम किताब है। इस किताब में हमने स्वरचित कविताओं का समावेश किया है। इस किताब में लिखी गई कविताओं को चार चरण में विभाजित किया गया है। हमने बचपन से लेकर आज तक तमाम लेखकों के किताब पढ़े हैं,तमाम कवियों की कविताएँ पढ़े हैं। हमारे मन में भी किताब लिखने की अभिलाषा जागृत हुई। फिर हमने 'स्वप्न-पथिक' नाम से इस किताब का लेखन कार्य प्रारंभ कर दिया। और काफी मशक्कत के बाद मैंने इस किताब को लिखकर पूरा किया। मैं चाहता हूँ कि देश के सभी लोग। भाषा के प्रति जागृत हो। और हिंदी भाषा का विकास करें। सभी पाठकों से हमारा अनुरोध है कि इस पुस्तक को पढ़ें और भाव को समझने का कोशिश करें। इस किताब को पढ़ने से आपको कुछ नए शब्दों की भी जानकारी होगी।

धन्यवाद ,

(आशुतोष प्रताप "यदुवंशी")

विषय-वस्तु

प्रथम चरण- प्रेम प्रसंग

1-**एक प्रेम व्यथा**

2- **इस बार प्रिये हर बार प्रिये**

3-**प्रेम प्रशंसक**

4- **असफल प्रेमी की व्यथा**

5- **प्रेमी की कल्पना**

6- **आनंदित प्रेमी**

द्वितीय चरण- लक्ष्य और कर्म प्रसंग

1- **लक्ष्य और कर्म का स्नेही**

2- **लक्ष्य प्रेमी का अथक परिचय**

3- **कार्यरत लक्ष्य प्रेमी**

4- **एक प्रश्न दुनिया से**

5- **आदर्श जीवन की कल्पना**

6- **विजेता का भाव**

7- **हृदय की आवाज**

तृतीय चरण- देश प्रेम एवं शौर्य प्रसंग

1-**वीर की अभिलाषा**

2- **जो शास्त्र उठा लें वीर सभी**

3- **माँ भारती की आरती**

4- **मैं योद्धा हूँ**

5- **स्वदेश की रक्षा**

6- **वीर का समर्पण**

चतुर्थ चरण- प्रकृति एवं समाजिक प्रसंग

1- **वृक्ष की आवाज़**

2- **बचा लो प्रकृति को**

3- **संस्कार,सभ्यता मत भूलो**

4- **अपना प्यारा गाँव**

5- **किसान की जिंदगी**

प्रथम चरण

प्रेम-प्रसंग

1. एक प्रेम व्यथा

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|
एक सौंदर्य मुस्कान देखा तेरा,
एक तरफा अनुराग में खो पड़ा|
तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

मैंने देखा तुझे स्वप्न पथ मोड़ पर,
अप्सरा आ गई स्वर्ग को छोड़कर|
परमधाम से कोई अनुग्रह हुआ,
मानो एक आह मैंने स्वप्न में भरा|
तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

स्वप्न पथ मोड पर एक उपवन मिला,
और वहां पर दिखी हमको मोनालिसा|
पुष्प ले अग्रसर था मैं उसकी तरफ,

अंत में जा सका ना मैं उसके तलक|

तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

मानो अनुपम से आश्रय में मैं था बसा,

प्रायः से दिखी हमको मोनालिसा|

चाह ऐसी हुई कि मैं पा लूँ उसे,

किंतु यह कल्पना सत्य ना हो सका|

तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

देखते हैं तुम्हें स्वप्न में जब भी हम,

एक पल शांति अनुभूति होता हमें|

दृष्टि टिक जाती है तेरे सौंदर्य पर,

लुप्त हो जाती हो हमसे करती हो छल|

तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

एक अद्भुत अटल दीप्ति मुख पर तेरे,

जो हृदय में बसा सम्मिलन से तेरे|

तेरे सौंदर्य पर मैं दीवाना हुआ,

भूल जाता स्वयं को तेरे प्रीत में|

तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

सौम्य मुस्कान पर मैं फ़िदा हूँ तेरे,

सौम्यता बस गई तेरी दिल में मेरे|

मैं तेरे प्रीत में स्वप्न-पथ पर चलूँ,

उस पथ पर भी हर पल तेरा साथ दूँ|

तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,

स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

है मनोकामना मेरा पाना तुझे,
गीत के रूप में गुनगुनाना तुझे|
मैं हूँ शायर तेरा तू मेरी शायरी,
प्यार में तुझको उपमा दूँ सूखदायिनी|
तू है देवांगना मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

एक अनुपम सुशीला-सी लगती हो तुम,
पथ-अटल दिव्य ज्योति की जलती हो तुम|
है तेरी रोशनी से उजाला हुआ,
तेरे नयनों ने हमको दीवाना किया|
तू ही देवांगना तू ही दिव्यांगना,
स्वप्न में ढूंढने तुझको मैं चल पड़ा|

तू है सुरसुंदरी मैं पथिक हूँ तेरा,
स्वप्न में ढूँढने तुझको मैं चल पड़ा|

अंत में रात बीती सुबह हो गई,
हमको दिव्यांगना वह दगा दे गई|
दिव्य ज्योति थी उसके नयन बिंदु में,
डुबकियाँ में लगाता अमन सिंधु में|
वही देवांगना, वही दिव्यांगना,

स्वप्न में मैंने ढूंढा दगा दे गई|

वही अवंतिका,वही अनामिका,

स्वप्न में उसको देखा दगा दे गई|

स्वप्न में उसको देखा दगा दे गई........................... ||

,

2. इस बार प्रिये,हर बार प्रिये

मैं तो स्वप्न में तेरा छवि देखूँ ,

आया हूँ तुमसे मिलन के लिए ||

मैं तेरे द्वार पर आया हूँ ,

आओ तुम अभिनंदन के लिए ||

जो फूल सजाया था तुमने ,

हमने उसका आनंद लिया ||

अब मैं तुम्हें सजाऊंगा ,

इस बार प्रिये,हर बार प्रिये ||

तुम एक परी-सी बन जाना ,

मैं देव पुरुष बन जाऊंगा ||

तुम स्वप्न में मुझे बुलाओगी ,

मैं स्वप्न-पथिक बन जाऊंगा ||

हम साथ में जश्न मनाएंगे ,

इस बार प्रिये,हर बार प्रिये ||

अवसर जो आज ये आया है ,

स्वीकार करो,सत्कार करो||

तुम तो राधा-सी लगती हो ,

मेरा कृष्ण रुप स्वीकार करो ||

संग चले पुष्प की वादी में ,

इस बार प्रिये,हर बार प्रिये ||

तुम अधरों पर मुस्कान लिए ,

मेरे सम्मुख आ जाती हो ||

घायल करती हो नयनों से ,

दिल में तुम प्रेम का भाव लिये ||

हमने तुमको सर्वस्व दिये ,

इस बार प्रिये,हर बार प्रिये ||

तुम व्योमवाहिनी-सी निर्मल ,

मैं भी निर्मल हो जाता हूँ ||

तुम स्वप्न सुंदरी बन जाओ ,

मैं स्वप्न पथिक बन जाता हूँ ||

तुमने है दिव्य श्रृंगार किये ,

इस बार प्रिये,हर बार प्रिये ||

है मेरा प्रेम बस तेरे लिए ,

हमने तुमको सर्वस्व दिये ||

मैं तुम्हें बुलाऊँ आ जाना ,

कुछ पुष्प लिये,मुस्कान लिये ||

है हम दोनों ने प्रेम किये ,

इस जन्म प्रिये,हर जन्म प्रिये ||

मैं स्वप्न में तेरी छवि देखूँ ,

इस बार प्रिये,हर बार प्रिये ||

3. प्रेम-प्रशंसक

पुष्प की एक सुंदर कली हो ,

मैंने देखा तुम्हें पुष्प वन में |

सांत्वना हमको देती रही हो ,

आगमन करके मेरे स्वपन में |

जब भी देखूँ तुम्हें स्वप्न-पथ पर ,

देता आश्रय तुम्हें स्वर्ण रथ पर |

दो दिलों की यही नम्रता है ,

सर्व आश्रय तेरी सभ्यता है |

हूँ तेरी रम्यता का दीवाना ,

आज़माना ना तुम जाने जाना |

स्नेह का है तेरे आज़माइश ,

तेरे अनुरक्ति कि मेरी ख्व़ाहिश |

आओ लेकर चलें व्योम शशि तक ,

स्वर्ग के शांति सुख के फलक तक |

एक प्यारी-सी मुस्कान हँस दो ,

चला आऊँ मैं फिर स्वप्न-पथ तक |

एक अंतिम मनोकामना है ,

अब तुम्हें साथ देना मेरा है |

स्वप्न पथ पर चले हम दो प्रेमी ,

अग्नि वर्षा हमें झेलना है |

भावना में मेरे है समाया ,

पुष्प के वादी तक चलते जाना |

मार्ग में गर मिले कोई राही ,

उससे कहना हमें स्वर्ग जाना |

आशियाना बसाना हमें है ,

पुष्प वादी के पावन झलक में |

एक दुनिया हमारी बसेगी ,

स्वर्ग के एक अनुपम महल में |

पुष्प की एक सुंदर कली हो ,

हमने देखा तुम्हें पुष्प वन में |

4. असफल प्रेमी की व्यथा

तेरे सौम्य प्रीत के चक्कर में ,

मैंने तेरा सत्कार किया |

स्वप्न में तेरा छवि देखूँ ,

वह भी मैंने स्वीकार किया |

तेरे प्रेम के कारण ही ,

मेरा जीवन बर्बाद हुआ |

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता |

तेरा रुप यौवन देखा तो ,

हमको तुमसे प्यार हुआ |

तेरा अनुसरण करता हूँ ,

अब तो जीना दुसवार हुआ |

तेरे प्रेम में ना पड़ता तो ,

पी.एम.भी मैं बन लेता |

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता |

मैं स्वप्न में तेरा छवि देखूँ,

साक्षात् में तुमसे प्रेम करूँ।

तेरे प्रीत के चक्कर में ,

कॉलेज जाने में देर करूँ।

मैं भी कलेक्टर बन जाता ,

जो थोड़ी पढ़ाई कर लेता।

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता।

स्वप्न पथिक बन जाता हूँ ,

जब कभी नींद में सोता हूँ।

अर्धरात्रि में नींद खुले ,

असफलता पर मैं रोता हूँ।

अगर मोहब्बत न करता ,

तो नींद भी पूरी कर लेता।

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता।

हमने तुमको याद किया तो ,

तुम उपवन में खड़ी मिली |

हमने देखा उपवन में एक ,

पुष्प वृक्ष की डाल हिली |

अगर तू नीचे आ जाती तो ,

पुष्प वृष्टि मैं कर देता |

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता |

तेरे इस झूठे से प्रेम ने ,

पथ से विचलित किया मुझे |

हमने तुमको सर्वस्व दिया ,

पर तुमने कुछ ना दिया मुझे |

तेरे भाव को देख-परख कर ,

ख्याल तभी मैं कर लेता |

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता |

तेरी रम्यता देखा तो ,

आशिकी में तेरे चूर हुआ |

तुमने धोखा दिया हमें तो ,

हृदय ये चकनाचूर हुआ |

तेरे इस छल का अनुभव ,

यदि स्वप्न में भी मैं कर लेता |

एक सफल जीवन होता ,

जो प्यार में खुद से कर लेता |

एक सफल जीवन................................. ||

5. प्रेमी की कल्पना

बहारों का मौसम वो सुंदर हसीना ,

उसे देखकर गीत गाने लगा हूँ ||

वो पल खूबसूरत मेरी ज़िंदगी का ,

उसे स्वप्न में देख खोने लगा हूँ |

वो दिव्यांगना प्रेम की वो समंदर ,

नदी बन के उसमें समाने लगा हूँ |

बहारों का मौसम वो सुंदर हसीना ,

उसे देखकर गीत गाने लगा हूँ ||

चली एक आँधी उसी पुष्प वन से ,

मैं फूलों की बारिश कराने लगा हूँ |

कहीं दिख गई वो मुझे फिर स्वपन में ,

प्यार का एक तराना मैं गाने लगा हूँ |

चली एक आंधी उसी पुष्प वन से ,

खुशबुओं में उसके समाने लगा हूँ |

बहारों का मौसम वो सुंदर हसीना ,

उसे देखकर गीत गाने लगा हूँ ||

मिला कोई भँवरा अगर रास्ते में ,

उसी के तरह गुनगुनाने लगा हूँ |

वो राधा के लगती है दिव्यांगना ,

कृष्ण के जैसे मुरली बजाने लगा हूँ |

चलो साथ मिलकर चले आज मधुवन ,

नए रंग में आज रंगने लगा हूँ |

बहारों का मौसम वो सुंदर हसीना ,

उसे देखकर गीत गाने लगा हूँ ||

तुम्हें खोजने मैं चलूँ व्योम शशि तक ,

स्वप्न के राह पर मैं तो जाने लगा हूँ |

जो सूखे पड़े थे बगीचे धरा पर ,

मैं उनमें भी कलियाँ खिलाने लगा हूँ |

तुम्हें खोजने व्योम,शशि तक नहीं ,

स्वर्ग के द्‌वार तक भी मैं जाने लगा हूँ |

बहारों का मौसम वो सुंदर हसीना ,

उसे देखकर गीत गाने लगा हूँ ||

बहारों का मौसम... ||

6. आनंदित प्रेमी

अब हमें पुष्प-सी रूपसी मिल गई ,
कलानिधि की हमें ऱोशनी मिल गई |
मेरी जन्मो-जन्म से बहुत थी व्यथा ,
आज गंगा-सी स्रोतस्विनी मिल गई |

महाश्वेता-सी लगती है स्मिति तेरी ,
नभ-गंगा-सी पावन तेरी रम्यता |
सौम्य दस्तूर तेरी सनातन-सी है ,
कृष्ण हूँ मैं हमें राधिका मिल गई |

शुक्ल संगत तेरी चारुता दिख रही ,
दिव्य कमनीय-सी सौम्यता दिख रही |
ज्ञान से तेरे हूँ मैं प्रकाशित हुआ ,
हमको साक्षात् वागेश्वरी मिल गई |

मैं हूँ तत्पर कुसुम को लिए हाथ में ,
मानो माधव खड़े हरिप्रिया साथ में |
वह सुशोभित-सा संयोग दिलचस्प था ,
मानो हमको हमारी प्रिया मिल गई |

नीरनिधि के तरह भद्र मैं हो गया ,

यातना से हृदय के मैं व्याकुल हुआ |

एक पल में अचानक से मैं हँस पड़ा ,

मानो हमको कोई अप्सरा मिल गई |

वल्लभा तुम मेरी और प्रिया भी मेरी ,

मैं हूँ मायापति तुम हो माया मेरी |

सत्यता पर तेरे मैं दीवाना हुआ ,

कोई दिव्यांगना स्वर्ग से आ गई |

स्वप्न में फिर हमें सुंदरी मिल गई ,

चंद्रमा-सी हमें रोशनी मिल गई |

मेरी जन्मों-जन्म से बहुत थी व्यथा ,

स्वप्न में हमको फिर अप्सरा मिल गई |

मानो हमको हमारी प्रिया मिल गई ||

मानो हमको..||

द्वितीय चरण

लक्ष्य एवं कर्म प्रसंग

1. कर्म का स्नेही

मैं कर्म का अपने प्रेमी हूँ ,

जीवन में सफलता लक्ष्य मेरा ||

यह कर्मभूमि है धरती है ,

चलते जाना है लक्ष्य मेरा ||

हर खेल में विजयी बनना है ,

तक़दीर को अपने बनाना है ||

जो ना हो हस्त लकीरों पर ,

उसको भी कर दिखलाना है ||

उस देव से आशीर्वाद मिले ,

जिसने यह विश्व बनाया है ||

इस स्वर्ग से प्यारी धरती को ,

पुष्पों - मणियों से सजाया है ||

मैं भी तो कर्म का प्रेमी हूँ ,

तुम मेरा भी श्रृंगार करो ||

स्वप्न में भी मैं कर्म करूँ ,

तुम मेरा भी उद्धार करो ||

जब अटल नींद में सोता हूँ ,

मैं स्वप्न - पथिक बन जाता हूँ ||

है कर्म लक्ष्य ही स्वप्न मेरा ,

बस एक सफल जीवन के लिए ||

हमको एक मार्ग बनाना है ,

उस आने वाले कल के लिए ||

जब स्वप्न में विजयी होता हूँ ,

एक आत्मखुशी मिलती हमको ||

साक्षात् में विजयी बन जाऊँ ,

बस अब तो यही है लक्ष्य मेरा ||

मैं कर्म का अपने प्रेमी हूँ ,

जीवन में सफलता लक्ष्य मेरा ||

2. लक्ष्य-प्रेमी का अथक परिश्रम

देखा जब से प्रथम दृष्टि मैं ,

विश्व गमन भी करता हूँ |

तुझको पाने के आशा में ,

अथक परिश्रम करता हूँ |

अथक परिश्रम से बढ़कर ,

जीवन में कोई हीर नहीं |

अटल परिश्रम से न बने ,

ऐसी कोई तक़दीर नहीं |

अथक परिश्रम मैं तो रात के ,

स्वप्न में भी करता रहता |

अगर मार्ग में हों काँटे ,

तब भी मैं चलता रहता |

मिलता है आराम उसे मैं ,

अपनी व्यथा सुनाता हूँ |

मेहनत के कारण मैं तेरे ,

साथ नहीं रह पाता हूँ |

सूर्योदय से पहले ही मैं ,

बिस्तर से उठ जाता हूँ |

ब्रह्म-मुहूर्त में उठकर ,

मैं मेहनत में लग जाता हूँ |

लक्ष्य मेरे तुम फिक्र न करना ,

तेरे पास मैं आऊँगा |

लक्ष्य प्रेम क्या होता है ,

मैं दुनिया को बतलाऊँगा |

अथक परिश्रम करता हूँ मैं ,

लक्ष्य प्रेम में चूर हुआ |

लक्ष्य का आशिक बन कर मैं तो ,

पृथ्वी पर मशहूर हुआ |

पृथ्वी पर............................ ||

मानवता धर्म सभी का है ,

यह भी सबको बतला दें हम |

कर्म ही है.................... ||

3. कार्यरत लक्ष्य प्रेमी

मेहनत करते-करते मैं ,

एक साक्ष्य अमर कर जाऊँगा |

गिर-गिर कर आगे बढ़ कर ,

इतिहास नया लिख जाऊँगा |

आगाज़ अभी तो है मेरा ,

सीखना बहुत कुछ बाकी है |

अथक परिश्रम संघर्षों का ,

पथ ही मेरा साथी है |

चलते रहना,चलते रहना ,

गिर-गिर कर फिर से उठ जाना |

वीरों का है तो कर्म यही ,

संघर्ष के पथ पर टिक जाना |

मैं स्वप्न पथिक हूँ स्वप्न में भी ,

मेहनत मैं करता रहता हूँ |

जो विघ्न पड़े पथ में मेरे ,

मैं उनसे लड़ता रहता हूँ |

सच कहता हूँ इस कलयुग में ,

एक साक्ष्य अमर कर जाऊँगा |

एक स्वप्न पथिक,मेहनत प्रेमी ,

इतिहास अटल बन जाऊँगा |

विश्व विजय कर आया मैं ,

सबको यह बतला दो तुम |

मेहनत का परिणाम मेरा ,

सब को अवगत करवा दो तुम |

चलते रहना,बढ़ते रहना ,

परिश्रम है अनंत नहीं |

विश्राम है मेरा अंत नहीं.......... |

विश्राम है तेरा अंत नहीं..........||

चल पड़े मंजिल की तरफ |

तो पीछे मुड़कर मत देखो |

यदि पीछे मुड़कर देखो भी |

अपने कदमों को मत रोको |

4. एक प्रश्न दुनिया से

केवल मुँह से बातें करना ,

मेहनत कैसे हो सकता है ?

बिन पुष्पों के बाग़ानों का ,

रौनक कैसे हो सकता है ?

मैं एक प्रश्न के चक्कर में ,

ना जाने कब से घूम रहा ?

बिन मेहनत के यार मेरे ,

इज्जत कैसे हो सकता है ?

सर्दी में चलें हवाएँ जो ,

उनको सम्मान नहीं मिलती ।

गर्मी में उन्हीं हवाओं का ,

आवाह्न सब करते हैं ।

हृदयों जलाओ दिव्य-ज्योति ,

जो दुनिया को रौशन कर दे ।

हो एक सफल जीवन ऐसा ,

माँ-बाप को नव जीवन दे दे ।

बस एक प्रश्न इस दुनिया से ,

फिर मेरा दिल दोहराता है ।

केवल मुँह से बातें करना ,

मेहनत कैसे हो सकता है ।

बिन पुष्पों के बाग़ानों का ,

रौनक कैसे हो सकता है ?

तो चलो कर्म में लग जाएँ ,

एक ऐसा विश्व बनाएँ हम ।

कर्म के सभी पुजारी हो ,

कुछ ऐसा कर दिखला दें हम ।

कर्म ही है पूजा सबका ,

सब को अवगत करवा दें हम ।

मानवता धर्म सभी का है ,

यह भी सबको बतला दें हम |

कर्म ही है................... ||

5. आदर्श जीवन की कल्पना

सूखे जो वृक्ष हरे होंगे ,

जब लक्ष्य में मिल जाएगा |

उपवन में पुष्प खिलेंगे जब ,

सर्वस्व हमें मिल जाएगा |

असहायों-सी लाचारी ,

फिर न हमें सताएगी |

स्वप्न-पथ यात्रा कर जब ,

मंजिल हमें मिल जाएगी |

चेहरे पर मुस्कान मेरे ,

साथ में सब अपने होंगे |

शायद कुछ लोगों के ही ,

ऐसे अटल सपने होंगे |

हृदय में स्नेहदीप होगा ,

रौशन सा वह मंजर होगा |

वह दिव्य शक्ति मिल जाएगी ,

जो पुरखों का अनुभव होगा |

उषाकाल तब रम्य दिखेगा ,

एक सभ्य जीवन होगा |

संस्कृति और संस्कार ही ,

उन्नति का मकसद होगा |

लक्ष्य प्राप्ति के लिए पथ का ध्यान होगा ,

हर पल पग चलायमान होगा |

अंत तक लक्ष्य का ध्यान होगा ,

हर पल पग चलायमान होगा |

हर पल.............................. |

6. विजेता का भाव

हम अपने लक्ष्य के आगे ,

ये दुनिया भूल जाते हैं |

आत्मविश्वास के आगे ,

हार को भूल जाते हैं |

हमारे दिल में है आँधी ,

तुम्हें बतलाएँ उसको क्या |

हम अपने लक्ष्य के आगे ,

सभी को भूल जाते हैं |

हम अपने लक्ष्य के आगे ,

ये दुनिया भूल जाते हैं |

प्रणय है लक्ष्य से हमको ,

अभी उत्कर्ष मेरा है |

मैं हूँ उद्भव से ही आतुर ,

विजय ही लक्ष्य मेरा है |

ये सबको है पता कि मैं ,

सफलता का दीवाना हूँ |

विजय ही लक्ष्य मेरा है ,

ये पथ पहचान मेरा है |

कि अपने लक्ष्य से अवगत् ,

तुम्हें कैसे कराऊँ मैं |

मैं एक दिन जीत जाऊंगा ,

यही विश्वास है मेरा |

यही विश्वास है...................... |

7. हृदय की आवाज

चलो लक्ष्य की ओर ,

सफलता तभी मिलेगा |

लक्ष्य से जो डर गए ,

तो कुछ भी नहीं मिलेगा |

तेरी राह रोकने को ,

अरि बहुत खड़े हैं |

तेरी मंजिल के हर सरहद पर ,

शत्रु अड़े हैं |

चलो कर्म के ओर ,

सफलता तभी मिलेगा |

दिखला दो अपना शौर्य ,

सफलता तभी मिलेगा |

लिए हाथ में जीत का ध्वज ,

जो कोई मार्ग से आते |

सम्मुख पर जाने पर ,

धीरे से मुस्काते |

करो कर्म तुम वीर ,

सफलता तभी मिलेगा |

कृषक-सा धरो तुम धीर ,

सफलता तभी मिलेगा |

रूखा-सूखा अन्न है ,

लेकिन मेहनत का है |

एक दिन होगी तेरी जीत ,

फैसला किस्मत का है |

एक दिन...................... ||

तृतीय चरण

देश-प्रेम एवं शौर्य प्रसंग

1. वीर की अभिलाषा

माना कि मैं हूँ देव नहीं ,

पर देव तुल्य बन जाऊँगा |

हिंद के इस पावन मिट्टी में ,

साक्ष्य अमर कर जाऊँगा |

यह देवभूमि है भारत है ,

वीरों का शौर्य प्रमाण यहाँ |

परितोष सौम्यता विस्तृत है ,

मानवता का त्योहार यहाँ |

मैं मृत्यु के आने से पहले ,

कुछ कार्य अमिट कर जाऊँगा |

खाता हूँ कसम भारत माँ की ,

एक साक्ष्य अमर कर जाऊँगा |

दुश्मन हो ताकतवर कितना ,

न मेरे बाहुबल के जितना |

रण में में धूल चटा दूँगा ,

अरि को मैं सबक सिखा दूँगा |

रणविजयी होने से पहले ,

एलान विजय का कराऊँगा |

सच कहता हूँ भारत माँ से ,

इतिहास नया रच जाऊँगा |

अभी हाथ में पुष्प मगर ,

मैं भी हथियार चला लुंगा |

यदि धर्म के ध्वज पर हो विपदा ,

अभिमन्यु बन लड़ जाऊँगा |

आशीष दो तुम जननी हमको ,

मैं व्यूह विजय कर आऊँगा |

सच कहता हूँ धरती माँ से ,

गाथा प्रचलित कर जाऊँगा |

मैं अभिमन्यु प्राचीन नहीं ,

जो व्यूह में ही फस जाऊँगा |

संपूर्ण व्यूह को तोड़ के मैं ,

जीवित ही वापस आऊँगा |

माना कि मैं हूँ देव नहीं ,

पर देव तुल्य बन जाऊँगा |

भारत के पावन मिट्टी में ,

साक्ष्य अमर कर जाऊँगा |

भारत के......................... ||

2. जो शस्त्र उठा लें वीर सभी

जो शस्त्र उठा लें वीर सभी ,

तो भ्रष्टाचार नहीं होगा |

इस शौर्य प्रमाणित धरती पर ,

कल्कि अवतार नहीं होगा |

जो धर्म के मार्ग पर सभी चलें ,

तो दुर्व्यवहार नहीं होगा |

दुनिया के दिन दु:खी जन पर ,

तब अत्याचार नहीं होगा |

जो शस्त्र उठा लें वीर सभी ,

तो भ्रष्टाचार नहीं होगा |

इस शौर्य प्रमाणित धरती पर ,

कल्कि अवतार नहीं होगा |

जो धर्म के पथ पर चले सभी ,

जीवन बेकार नहीं होगा |

ईश्वर का भरोसा करें सभी ,

जीवन में हार नहीं होगा |

जो शस्त्र उठा लें वीर सभी ,

अधर्म प्रचार नहीं होगा |

इस शौर्य प्रमाणित धरती पर ,

कल्कि अवतार नहीं होगा |

जो गलत धारणा रखते हैं ,

उनका सम्मान नहीं होगा |

जो वक्त के मारे लोग यहाँ ,

उनका अपमान नहीं होगा |

जो शस्त्र उठा लें वीर सभी ,

पापों का भ्रमार नहीं होगा |

इस शौर्य प्रमाणित धरती पर ,

कल्कि अवतार नहीं होगा |

जो शस्त्र उठा लें वीर सभी ,

तो भ्रष्टाचार नहीं होगा |

इस शौर्य प्रमाणित धरती पर ,

कल्कि अवतार नहीं होगा |

इस शौर्य....................................... ||

3. माँ भारती की आरती

माँ भारती की आरती ,

उतारते चलो |

केसरी बाना में तुम ,

दहाड़ते चलो |

अमर्त्य वीर पुत्र हो ,

पथ पर अटल रहो |

दुश्मन के छाती पर तिरंगा ,

गाड़ते चलो |

जो बाधा आए पथ में ,

उनसे जूझते रहो |

हिम के मार्ग पर भी अग्नि ,

फूँकते रहो |

जो चल पड़े हो वीर ,

विजय मार्ग पर चलो |

तुम निडर हो वीर तुम ,

कृपाण ले चलो |

अरि सामने अगर हो ,

केसरी दहाड़ दो |

नरसिंह का अवतार ले ,

दुश्मन को फाड़ दो |

सहस्त्र गज का बल तुम्हारे ,

देह में भरा |

धरती के वीर पुत्र जोर से ,

दहाड़ दो |

माँ भारती की आरती

उतारते चलो |

वीर के श्रृंगार में ,

दहाड़ते चलो |

पृथ्वी के वीर पुत्र तुम ,

पथ पर अटल रहो |

अरि मस्तकों को तुम ,

कृपाण से उखाड़ दो |

दुश्मन के छाती पर तिरंगा ,

गाड़ते चलो |

माँ भारती की आरती ,

उतारते चलो |

माँ भारती की................. ||

4. मैं योद्धा हूँ

मैं योद्धा हूँ हिंद देश से ,

प्रेम है हमको |

अगणित् बार युद्ध भूमि में ,

लहू बहाए |

व्योम में जितने तारे हैं ,

उतने वर्षों से |

मेरे पुरखों ने अगणित् ,

इतिहास रचे हैं |

अपने देश भारतवर्ष के ,

रक्षा के हित |

अगणित् बार युद्ध लड़ा ,

पीढ़ियाँ हमारा |

और भविष्य में आने वाली ,

सदियों में |

मेरे वंशज ना जाने कितने ,

युद्ध लड़ेंगे |

अपनी प्यारी भारत माँ की ,

रक्षा के हित |

न जाने कितने वीरों ने हैं ,

प्राण गवाएँ |

हमने ना जाने कितने ,

अरियों से लड़ कर के |

अपने प्यारे भारत का ,

स्वाभिमान बचाया |

मैं योद्धा हूँ हिंद देश से ,

प्रेम है हमको |

अगणित् बार युद्ध भूमि में ,

लहू बहाए |

मैं योद्धा हूँ...................... ||

5. स्वदेश की रक्षा

आग जो उगल रही ,

अरि शक्तियाँ विदेश की |

युद्ध करने जाऊँगा मैं ,

रक्षा हित स्वदेश की |

मिट्टी का तिलक भाल पर ,

हाथ में कृपाण हो |

देश का हर नौजवान ,

लड़ने को तैयार हो |

अरि शक्तियों का क्या प्रभाव ,

होगा अपने देश पर ?

कोई भी बला फिर नहीं ,

आ सकेगी स्वदेश पर |

युद्ध में विजय हमारा ,

जननी का वरदान है |

अखंड हिंदुस्तान ,

तिरंगा ही अपना शाऩ है |

जो चल पड़े तो फिर से ,

कदम रुकने नहीं चाहिए |

कट जाए सर भले ही

लेकिन झुकने नहीं चाहिए |

सत्य कहता हूँ ,

अरि विजय मैं करके आऊँगा |

मैं तो अपना शोर्य ,

विश्व को अवगत् कराऊँगा |

अपने हृदय के अग्नि से ,

दुश्मन के दल को फूँक दो |

मिल जाए यदि ख़ाई कोई ,

उसमें भी अरि को झोंक दो |

हिंद का विजय हो बस ,

अपना यही कर्तव्य है |

युद्ध को विकऱाल कर ,

साहस तेरा अदम्य है |

जीतना ही धर्म और ,

जीतना ही कर्म है |

युद्ध हो प्रचंड ,

युद्ध करना अपना धर्म है |

देश का विजय हो ,

हर बंधिशों को तोड़ दो |

अपने भुजा के शक्ति से ,

दुश्मन का रीढ़ तोड़ दो |

आरंभ है प्रचंड है तो ,

अंत भी प्रचंड हो |

रणभूमि में जो जीत हो ,

उसका ना घमंड हो |

गर्व से पुलकित रहो ,

हो गर्व अपने देश पर |

आग जो उगल रही ,

अरि शक्तियाँ विदेश की |

युद्ध करने जाऊँगा मैं ,

रक्षा हित स्वदेश की |

युध्द करने.................... ||

(शौर्य काव्य)

युद्ध प्रदर्शन,चक्र सुदर्शन ,

और धनुष गांडीव था |

सत्य कह रहा हूँ ,

पांडव विजय का नींव था |

रणभूमि में उतरकर ,

ऐसा ही इतिहास रचाऊँगा |

साथ माधव हों या न ,

वैसा ही शोर्य दिखलाऊँगा ||

6. वीर का समर्पण

स्वप्न रक्त प्राण अर्पित ,

कर दूँगा स्वदेश को |

लेकिन कभी भी मैं न झुकने ,

दूँगा अपने देश को |

जिस प्रकार कोई भी ,

छू पाता न दिनेश को |

अरि शक्तियाँ नहीं छू पाएँगी ,

अपने देश को |

रक्त की नदियाँ बहेंगी ,

पानी के तालाब में |

अरि सर्वनाश कर दूँगा ,

युद्ध के सैलाब में |

हाथ में त्रिशूल मेरे ,

या कोई कृपाण हो |

चाहे हाथ में मेरे ,

धनुष और बाण हो |

मैं चाहता हूँ अरिदल पर ,

कोई तीव्र प्रहार हो |

युद्ध भूमि में वीरों का ,

केसरी दहाड़ हो |

नभ दामिनी दमक उठे ,

अरि दंत फिर कंपन करें |

हिंद शौर्य का प्रचार हो ,

अरिदल पर तीव्र प्रहार हो |

विजय का त्यौहार हो ,

दुश्मन पर तीव्र प्रहार हो |

दुश्मन पर............................ ||

चतुर्थ चरण

प्रकृति एवं सामाजिक प्रसंग

1. वृक्ष की आवाज़

मैं वही वृक्ष हूँ ,

जिस पर तुम सबने |

बचपन में ,

खेला था |

फल फूल भी ,

तुमने खाए थे |

मस्ती भी तुमने ,

खूब किया |

जब कभी तुम ,

थक जाते थे |

आराम किया ,

मेरी छाया में |

फिर मुझको ,

क्यों काट रहे हो ?

क्या तुम सबको ,

न भाया मैं |

हमने तुमको ,

फल-फूल दिए |

पत्ते भी दिये ,

औषधि भी भी दिये |

फिर तुम क्यों ,

मुझ को काट रहे |

ना अपना फर्ज ,

निभाया मैं |

मैंने तुमसे ,

कुछ भी न लिया |

जीवन भर सब कुछ ,

दान किया |

आवश्यकता पड़ने ,

पर हमने |

सुखी लकड़ी भी ,

दान किया |

फिर मुझको ,

क्यों काट रहे हो ?

हमने क्या संताप दिया ?

हमने क्या........................... ||

2. बचा लो प्रकृति को

बचा लो प्रकृति को ,

उस आने वाले कल के लिए |

अपनों के लिए सपनों के लिए ,

आने वाले भविष्य के लिए |

तुम वृक्ष काटना बंद करो ,

वृक्षों में भी जीवन होता |

मत मारो जीव जंतुओं को ,

उनका अपना जीवन होता |

कुछ तो बचा के रख लो तुम ,

आने वाले कल के लिए |

हो रहा प्रदूषण धुएँ से ,

उसको भी थोड़ा कम कर दो |

प्रदूषित हो रही यह धरती ,

थोड़ा तो आँखें नम कर लो |

जल ही जीवन है सबका ,

जल को तुम मत बर्बाद करो |

हवा भी जीवन है सबका ,

तुम हवा को भी तो शुद्ध करो |

बचा लो प्रकृति को ,

उस आने वाले कल के लिए |

बचा लो थोड़ा प्रकृति को ,

पृथ्वी पर नवजीवन के लिए |

पर्वतों को तोड़ रहे ,

नदियों को दूषित करते क्यों ?

जरा-सा फायदे के लिए ,

जीवो के शिकार को बंद करो |

पृथ्वी को बचा के रखना है ,

तुम सब थोड़ा सहयोग करो |

जाने कितना औषधि देता ,

जंगल की कटाई बंद करो |

खुद भी वृक्ष लगाओ और ,

लोगों को प्रेरित भी करो |

बचा लो प्रकृति को ,

आने वाले कल के लिए |

आने वाले कल के लिए ,

अपनों के जीवन के लिए |

अपनों के...............................||

3. संस्कार,सभ्यता मत भूलो

बदल रहें हैं लोग यहाँ ,

और बदल रहा परिवेश है |

सत्य कहें तो बहुत तीव्र से ,

बदल रहा यह देश है |

संस्कार,संस्कृति त्याग कर ,

लोग यहाँ के बदल रहे |

अपनत्व को भूलकर ,

यह कैसा नीति सीख रहे |

सभ्यता कुचली जा रही यहाँ ,

हर सभ्य व्यक्ति यहाँ पागल है |

लगता है कि यह समाज ,

पूरी तरह से घायल है |

थोड़े से धन के लालच में ,

गैरों का हक़ क्यों छीन रहे |

क्या उस दिन को भूल गए ,
जब स्वतंत्रता के विहीन रहे ?

ब्रिटिश और मुगलों के शासन में ,
एकता तुम्हारी अटल रही |

फिर आज हो क्यों खंडित होते ,
यह आँधी कैसी है चल रही ?

जाति धर्म के नाम पर झगड़ा ,
तब तक था कुछ चलने लायक |

अब भाई-भाई लड़ते हैं ,
क्या नहीं रहे सहने लायक ?

याद करो उस दिन को जब ,
बापू के पीछे सभी चले |

याद करो उस दिन को भी ,
जब भगत सिंह के साथ चले |

एकात्मता वह कहाँ गई ,

फिर से वह वापस ले आओ |

अंग्रेजों से आजाद हुए ,

ना जाने कितने समय गए |

ईर्ष्या-झगड़े की बात अलग ,

संस्कार,सभ्यता मत भूलो |

संस्कृति को अपने मत भूलो ,

संस्कार,सभ्यता मत भूलो |

संस्कार,सभ्यता.......................... |

4. अपना प्यारा गाँव

स्वर्ग से सुंदर ,

सपनों से न्यारा |

अपना प्यारा ,

यह गाँव है |

यहाँ आम के ,

वृक्ष लगे हैं |

और नीम की ,

छाँव है |

गाँव में स्वच्छ ,

हवाएँ बहती |

और खेत ,

खलिहान है |

कहीं-कहीं खेतों के पास में ,

बहुत बड़े उद्यान हैं |

खेतों में फसलें ,

उगती है |

सब्जी और ,

फल फूल भी |

गाँव के कुछ ही ,

दूर पर मिलते |

कॉलेज भी ,

स्कूल भी |

स्वर्ग से सुंदर ,

सपनों से प्यारा |

अपना प्यारा ,

यह गाँव है |

कहीं आम की ,

छाँव है |

तो कहीं खेत ,

खलिहान है |

स्वर्ग से सुंदर ,

सपनों से प्यारा |

कितना प्यारा ,

यह गाँव है |

स्वर्ग से सुंदर................. ||

5. किसान की जिंदगी

जन्म लिया इस मिट्टी पर ,

अंत भी मिट्टी में होगा |

मिट्टी का कर्ज चुकाने के ,

कोशिश में लगी पीढ़ियाँ मेरी |

मैं अपना फर्ज निभाता हूँ ,

खेतों को अपनी रक्षित कर |

मैं अपनी फसल उगाता हूँ ,

मेहनत से मिट्टी सिंचित कर |

ना जाने कितने बंजर को ,

उपजाऊ हमने बना डाला |

ना जाने कितने खेतों में ,

हमने है अन्न उगा डाला |

अन्नदाता लोग कहते हैं ,

फिर भी परेशानी सहता हूँ |

वह जो बंगलों में बैठे हैं ,

खेती का महत्व क्या जाने |

किसान जो खेती ना करें ,

तो भुखमरी पड़ जाएगा |

शायद उनको पता नहीं ,

तब पैसा काम न आएगा |

एक किसान का जीवन भी ,

इतना आसान नहीं होता |

तो बोलो एक किसान का ,

क्या सम्मान नहीं होता |

मेहनत से फसल उगाते हैं ,

अपने मेहनत की खाते हैं

जो भूखे लोग मिले हमको ,

उनको भी अन्न कराते हैं |

तो कर्मभूमि इस धरती पर ,

तभी हम पूजे जाते हैं |

हाँ हम वही किसान हैं ,

जो सबको अन्न कराते हैं |

हाँ हम वही...................... ||